P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

# 'तुम्हे बदलना ही होगा' उपन्यास में दलित महिमा चेतना

**हेमन्त कुमार**
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

**सारांश**

हिन्दी में दलित उपन्यासों के माध्यम से दलित चेतना व दलित साहित्य के द्वारा दलित व गैर दलित महिमाओं में शिक्षा के माध्यम से चेतना लाने का प्रयास किया जा रहा है। किसी भी समाज में परिवर्तन की शुरूआत शिक्षा एवं विचारों के परिवर्तन से ही सम्भव हो सकती है। शिक्षा से परम्परागत विचार एवं रूढ़ियों को खण्डित किया जा सकता है। जिसने सदियों से शारीरिक व मानसिक उत्पीडन का जहर पीया हो तो उसमें क्रोध की ज्वाला उस विद्रोह के प्रति रहती है। इस उपन्यास में दलित जीवन की वर्णवादी व जातिवादी समस्याओं का वर्णन किया गया है। इसमें स्त्री चेतना व दलित महिमा चेतना पर उपन्यास की प्रमुख पात्र महिमा के द्वारा अनेक कार्य किये गये महिमा दलित महिमाओं व गैर दलित महिमाओं में चेतना लाने का भरसक प्रयास करती रहती है व घर–घर जाकर के महिमाओं में चेनता व शिक्षा लाने का प्रयास करती है महिमा का मानना है कि जब तक दलित महिमायें पढ़ लिख कर शिक्षा प्राप्त नहीं करेगी तब तक उनमें चेतना नहीं आ सकती है तथा वे सम्मान व अधिकार भी प्राप्त नहीं कर पायेगी। इसलिये शिक्षा के माध्यम से चेतना लानी होगी समाज में सभी लोग समान समझे जाये जहां स्त्री पुरूष व दलित महिमाये सभी को बराबर का अधिकार मिले। चारों तरफ समाज में चेतना आ जाये जिससे एक बेहतर समाज का निर्माण हो सके महिमा अपने पूरे जीवन संघर्ष में नारी समाज में चेतना लाने का प्रयास करती है। साथ ही इसमें डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों के प्रभाव से भी समाज में चेतना का प्रयास किया है सुशीला जी ने संदेश दिया है कि जातिवाद के जहर को अन्तरजातीय विवाह के द्वारा ही समाप्त किया जा सकता है। दलित एवं सवर्ण को आज नहीं तो कल आपस में सम्बन्ध बनाना ही पडेगा जब समाज में चेतना पूर्ण रूप से स्थापित हो जायेगी।

**मुख्य शब्द :** चेतना, रीति–रिवाज, रूढ़ि, विषमता, जागृति, सबलीकरण, अप्पदीपो भव, स्त्रीमुक्ति, शोषण, क्रान्तिसूर्य, स्वावलम्बी, सुदर्शन, दीन–हीन, खपरैल, पैतृक, समता, सम्मान आदि।

**प्रस्तावना**

हिन्दी में दलित उपन्यासो की संख्या बहुत कम है लेकिन इनकी जड़े काफी गहरी है सामाजिक यथार्थ को सही रूप में दलित उपन्यासों में प्रस्तुत किया गया है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के दलित उपन्यासो में रामजीलाल सहायक कृत 'बंधन मुक्त' हिन्दी का प्रथम दलित उपन्यास है। लेकिन आज यह अप्राप्त है।[1] लेकिन सभी दलित आलोचको एवं विद्वानों ने सन् 1994 में जयप्रकाश कर्दम द्वारा रचित 'छप्पर' को प्रथम दलित उपन्यास स्वीकार किया जाता है।[2] हिन्दी की प्रमुख दलित महिमा उपन्यासकारों में सुशीला टाकभौरे, रमाणेका गुप्ता, कुसुम मेघवाल, हेमलता महेभर आदि प्रमुख है।

सुशीला टाकभौरे जी के तीन उपन्यासो में से एक उपन्यास है 'तुम्हे बदलना ही होगा।' इस उपन्यास की कथा में जीवन को वर्णवादी व जातिवादी समस्याओं को आज के संदर्भ में बताया है। इस उपन्यास में समाज में व्याप्त छुआछुत की भावना और इससे जुड़े भेदभाव के व्यवहार के साथ साथ आगे की समस्या को बताया है। डॉ. सुशीला टॉकभौरे आज वर्तमान सदी की भारत में सामाजिक परिवर्तन की नायिका के रूप में हिन्दी साहित्य में संघर्षरत है। सुशीला जी के जीवन का संघर्ष समाज के विभिन्न पक्षों को उद्घटित करता है। वे अपने 'तुम्हे बदलना ही होगा' उपन्यास में दलितो व महिमाओं के उस पक्ष को उजागर करने का प्रयास करती है जिसके बिना समाज में चेतना संभव नहीं हो सकती है दलित समाज के लिये सबसे अधिक महत्वपूर्ण एक उच्च शिक्षा की प्राप्ति। शिक्षा के बिना दलित समाज जीवन के किसी भी मार्ग पर सफल नहीं हो सकता है। इसलिये सफलता व बदलाव के लिये शिक्षा बेहद जरूरी है। महिमा भारती समय के साथ साथ शिक्षा के महत्व को समझ चुकी है। महिमा को पूरा

विश्वास है कि शिक्षा प्राप्त करके ही दलित विभिन्न सामाजिक रूढ़ियों को तोड़कर ही समाज में चेतना का निर्माण कर सकते है व समाज की पुरानी परम्पराओं को बदला जा सकता है। आज वर्तमान में दलित साहित्य लेखन व शिक्षा से दलित समाज में चेतना आ रही है व लोग पुराने रीति–रिवाजों व परम्पराओं को तोड़ने की बात करने लगे है।

**अध्ययन के उद्देश्य**

1. दलित स्त्री–लेखन व उसकी प्रमुख समस्याओं व चुनौतियों को स्पष्ट करना।
2. दलित महिमा लेखिकाओं के बारे में जानकारी जुटाना एवं उनके साहित्य का अध्ययन करना।
3. दलित महिमाओं के प्रति समाज में जो घृणा मूलक वातावरण है उसको शिक्षा के माध्यम से मिटाने का प्रयास करना।
4. दलित साहित्य के मुख्य उद्देश्य मानवीय समता, स्वतन्त्रता एवं बन्धुत्व को समाज में स्थापित करना।
5. समाज में नारी के प्रति जो सोच है उसे बदलने का प्रयास कर महिमा शिक्षा को बढ़ावा देना जिससे नारी को भी समान अधिकार मिले।

**साहित्यावलोकन**

'तुम्हें बदलना ही होगा' उपन्यास की कथा में दलित जीवन की वर्ण जातिभेद की समस्याओं को आज के सन्दर्भ में बताया गया है। समय बदल रहा है दलित जीवन के दृश्य भी बदल रहे है। उपन्यास की एक पात्र महिमा है जो समाज में दलितों की स्थिति सुधारने में लगी हुई है समाज की पुरानी परम्पराएं बदल रहीं है। लोग पुराने रीति–रिवाजों को बदलने और रूढ़ि परम्पराओं को तोड़ने की बाते करने लगे है। महिमा शिक्षित है और प्राध्यापिका के पद पर कार्यरत है। जो उसे मुश्किलों का सामना करने के बाद प्राप्त होता है। दलित जाति की होने के कारण महिमा को हर जगह अपमान सहन करना पडता है।

डॉ. रमेशचन्द मीणा का मानना है कि वे डॉ. सुशीला टाकभौरे जातिमुक्त समाज के विजन को लेकर चलती है उसे कुछ तोडती है तो कुछ जोड़ती है। इसीलिये तुम्हे बदलना ही होगा उपन्यास में जातिवाद गढ को फतह करने के लिए अर्न्तजातीय विवाह से ही सामाजिक विषमता खत्म होगी तुम्हे बदलना ही होगा उपन्यास पर डॉ. अम्बेडकर की वैचारिकी का प्रभाव है।[3]

दलित पिछडे लोग रोजी–रोटी के लिये कितने परेशान रहते है यह बात सभी जानते है महिमा नौकरी की तलाश में रहती है। महिमा नौकरी का विज्ञापन देखकर अपना फार्म जमा कराती है जहां कोटे की सीट होने पर भी सवर्ण जाति के व्यक्ति को लगा लिया जाता है। मैनेजमैन्ट से बात करने पर महिमा भडक जाती है। वहीं मैनेजमैन्ट के एक कर्मचारी को पीटना शुरू कर देती है महिमा ने आवेश के साथ कहा''

डॉ. अम्बेडकर द्वारा दिए आरक्षण की ताकत से।[4] महिमा अम्बेडकर विचारधारा से प्रभावित है उपन्यास में चमनलाल बजाज का विवरण है जो कि होशियार समझदार और दूरदर्शी व्यापारी है। चमनलाल जानते है कि इन दिनों महिमा जागृति आन्दोलन पर चर्चा अधिक होने लगी है वे दलित विमर्श और महिमा विमर्श करके अपने आपको महान सिद्ध करना चाह रहे है। उनका यह प्रयास है कि वे निम्न दलित और उनके उद्वार सम्बन्धी कार्यो को प्राथमिकता देकर इन क्षेत्रों में भी अपना झंडा पहराए वे अपनी हवेली में बैठकर इन समस्याओं पर चर्चा करते है।

मीटिंग में चर्चा का विषय महिमा सबलीकरण होता है। महिमा सबलीकरण होगा तभी समाज में क्रांति हो सकेगी ''आज हम यहां उसी क्रांति के विषय में बात कर रहे हैं चाहे सूरज इधर से उधर हो जाए चाहे दिन की रात हो जाए चाहे रात का दिन हो जाए मगर हम अपनी बात पर डटे रहेंगे।''[5] महिमा सबलीकरण की क्रांति हम लाकर रहेंगे नारी हमारे समाज का अंग है। नारी के बिना उन्नति संभव नहीं है नारी को सबल बनाना जरूरी है। उसके लिए अपनी बहन बेटियों की रक्षा करना कर्त्तव्य है।

महिमा में स्त्री जागृति की प्रेरणा जगाने की ललक हमेशा ही रहती है। वह गरीब अछुत बच्चों की सहायता करती है, महिमा अपने ही कॉलेज की छात्रा शोभा के घर जाती है जहां लड़कियों की पढ़ाई पर जोर देती है। शोभा के पिता कहते है। ''ऐसा नहीं है सब ठीक ही चल रहा है लड़की का क्या है उसे अपने सुसराल जाना है।[6] बाद में लडके ही साथ रहेगे महिमा उनको अम्बेडकर के बारे में बताती है। उनकी वजह से ही हमें अधिकार मिले, हमारे बच्चे पढ़ रहे है। अम्बेडकर की दीक्षा भूमि नागपुर में सम्राट अशोक का धम्म चक्र प्रवर्तन दिन मनाया जाता है। महिमा ने कहा यह सभी दलित पिछड़ो का शोषित पीड़ितो की मुक्ति का त्यौहार है यहां दलित वंचितों की उन्नति और सामाजिक विचार परिवर्तन की बाते बताई गयी है।[7]

गौतम बुद्ध के महान संदेश 'अप्प दीपो भव' का महिमा आदर्श रखती है। वह इसी महिमा के माध्यम से सुशीला जी ने समाज में दलित आन्दोलन, महिमा चेतना को सही दिशा में ले जाने का कार्य किया प्रचार प्रसार किया इसके साथ ही स्त्री विमर्श व दलित स्त्री विमर्श को उठाती है तथा बहुजन समाज की महिमाओं के आन्दोलन की दिशा को मजबूत करने का प्रयास किया सुशीला जी ने महिमाओं को सामाजिक समस्याओं से लड़ने की बात कहीं की लड़ने से ही बदलाव संभव है। '' राहुल सांस्कृत्यायन ने कहा था – भागों नहीं दुनिया को बदलो'' इसी विचार की पुष्टि सुशीला टाकभौरे ने अपने उपन्यास में करती है।[8]

महिमा दलित आन्दोलन और महिमा आन्दोलन की अनेक संस्थाओं से जुड़कर दलित मुक्ति और स्त्री मुक्ति व स्त्री चेतना का कार्य करती है। गैर दलित महिमाएं अपनी स्वतन्त्रता और समता सम्मान की बातें नहीं समझ पाती है अपनी सुख सुविधाओं में डूबी ये महिमाएं अपने शोषण और अपमान को समझ नहीं पाती है ये महिमाऐं या तो पूरी तरह मुक्त और स्वछन्द रहना चाहती है या नहीं सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों में बंधकर परम्परा से चली आ रही है, रीति–नीति के समर्थन की बाते करती है। ये महिमाएं या तो पुरूषों का पूरी तरह विरोध करती है या पुरूषों की सत्ता और आधिपत्य को पूरी रतह से

स्वीकार करके चलती है। लेकिन दलित महिमाऐं इनके विपरीत होती है वे अपने अधिकारों के लिए लड़ना जानती है। ''दलित महिमाऐं इन दोनों रास्तों से अलग तीसरा मार्ग अपनाती है। न तो वे अपने घर परिवार को छोड़ने की बात करती है और न ही स्वयं को सेवा करने वाली दासी के रूप में स्वीकार करती है वे चाहती है पुरूषों के साथ जीवन के हर क्षेत्र में समानता पुरूषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की हिम्मत उनमें है। यदि पुरूष उनके साथ गलत व्यवहार करते है तो वे सड़को पर उतरकर अपने अपमान का बदला लेने के लिये आन्दोलन करती है।[9]

सावित्री बाई पुले स्त्रियों के लिए प्रेरणा है स्त्रियों के मार्ग को प्रकाशित करने वाली प्रकाश स्तंभ है। उन्होंने नारी शिक्षा की मशाल जलाकर समाज में क्रान्ति लाने का काम किया। आज की महिमाएं शिक्षित होकर नौकरी करने लगी है। यह प्रगति का प्रमाण है मगर अब भी वे कितनी स्वतंत्र है या कितना सम्मान पाती है यह बात विचारणीय है इनके साथ अब भी स्त्री पुरूष समानता का भेदभाव होता है नौकरी करने के बाद भी उन्हें अपना रूपया स्वयं रखने या खर्च करने का अधिकार नहीं रहता है। शिक्षित स्वावलम्बी होकर भी वे अबला नारी का जीवन जीती है।

इस उपन्यास पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर की वैचारिकी का प्रभाव है महिमा के द्वारा डॉ. अम्बेडकर के विचारों का जिक्र करना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है महिमा अम्बेडकर के स्त्री मुक्ति के विचारों को स्पष्ट करते हुए कहती है ''क्रान्ति सूर्य डॉ. अम्बेडकर को नमन जिन्होंने हमारे देश के लिखित संविधान में स्त्रियों को पुरूर्षो के समान अधिकार देकर उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में सक्षम बनाया है और 'हिन्दू कोड बिल' में अलग से अधिकार देकर स्त्रियों को शोषण उत्पीडन से मुक्त होने के अवसर और अधिकार दिये।[10]

तुम्हे बदलना ही होगा 'उपन्यास में दलित परिवारों की स्थिति बेहद चिन्ताजनक है। सुदर्शन वाल्मीकी अछूत दलित जातियों में जागृति का अभाव है। लोग अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते थे छोटी उम्र में ही उन्हें पैतृक धन्धे रोजगार में लगा दिया जाता है आर्थिक दृष्टि से भी उनकी बड़ी दीन–हीन स्थिति है। टूटे–फूटे छोटे खपरैल के घरों में वे अपने परिवार के साथ रहते है। दो वक्त की रोटी का जुगाड करना भी उनके लिए मुश्किल होता है। गन्दी बस्तियों में सभी असुविधाओं के बीच वे किसी तरह अपना जीवन जी रहे है। ऐसे समय में वे अपनी शोषित पीड़ित स्थिति की बातों को समझ ही नहीं पाते है उपन्यास के पात्र धीरज कुमार यथा सम्भव उनको समझाने का प्रयत्न करते रहते है।

दलितों के विषय में लोगों की धारणा बन गई है कि इनकी भाषा अश्लील व चोट करने वाली है। वे इस सच्चाई को भूल जाते है कि सदियों के घाव एक दो वर्षो में नहीं भरते जिसका वचपन अभाव भेदभाव आर्थिक तंगी एवं लिंग भेद का शिकार हुआ हो वह उसे आसानी से नहीं भूल सकता है। महिमा भी अपने उसी अतीत को याद करके सिहर जाती है ''महिमा जब भी अपनी वर्तमान स्थिति पर विचार करती है तब वह अपने जीवन की पुरानी यादों में खो जाती है। कैसे बीता उसका बचपन कैसे पढ़ सकी ? उन दिनों को याद करते हुए वह अब भी दुखी हो जाती है।[11] इन सब में उपन्यास का पात्र धीरज कुमार समाज परिवर्तन करना चाहता है। शुरूआत भी अपने घर से ही करता है। वह अपने माता पिता को पैतृक रोजगार करने से मना करता है। इस पर ठेकेदार द्वारा धीरज को जेल भिजवा दिया जाता है। इस पर सफाई कर्मचारियों को गुस्सा आता है उनकी भीड और एकता को देखकर धीरज को छोडना पडता है। यह वाल्मीकि समाज की एकता का परिचय था 'तुम्हे बदलना ही होगा' उपन्यास में नारी सबलीकरण की चर्चा की गई है। शांति निकेतन महाविद्यालय में स्त्री विमर्श का कार्यक्रम 'महिमा सबलीकरण की आवश्यकता पर चर्चा की जाती है नारी समाज का सम्मानीय वर्ग हैं'' जहां नारी का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते है मैं नारी शक्ति को नमन करता हूं नारी ही वह शक्ति है जो हमें दुनिया दिखाती है नारी मां है, बहन है। पत्नि है, प्रेयसी है हर रूप में नारी पूजनीय है।

नारी ही वह शक्ति है जो पूरी दुनिया को सही मार्ग दिखा सकती है। हमारा देश महान है जो नारी की पूजा शक्ति के रूप में करता है नारी के बिना पुरूष अधूरा है हम युगों युगों से नारी की पूजा कर रहे है मगर आज का युग नारी सबलीकरण का है। अब नारी सबल बनकर अपने अधिकारों की मांग स्वयं कर रही है।[12] उपन्यास की पात्र महिमा दलित महिमाओं में जागृति का काम करती है। उन्होंने महिमा सबलीकरण को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया हैं वे अक्सर कहती है ''नारी पुरूष से किसी बात से कम नहीं है फिर वह पुरूष के पीछे क्यों रहे? हर बात में हर कदम पर दोनों को साथ–साथ रहना चाहिए।''[13]

सुशीला जी इस उपन्यास में सभी वर्ग की महिमाओं की समस्याओं से चिन्तित रही है। उनका मानना था कि ''यथार्थ में सम्पूर्ण महिमा वर्ग ही शोषित पीड़ित और दलित है।[14] सवर्ण महिमाओं को अपनी जाति व धर्म का गर्व छोड़कर जाति व्यवस्था व वर्ण व्यवस्था का विरोध करना चाहिए। समाज में हो रहे स्त्रियों के खिलाफ हिंसा का वर्णन करते हुए समुचे स्त्री समाज को इसके लिए एक जुट करने का आव्हान करती है। ''जाति विहीन समाज में ही समता, सम्मान और मुक्ति की बात सम्भव हो सकती है।''[15] लेखिका का उत्स समग्रता में है। वह सभी वर्गो की महिमाओं को एक साथ लेकर चलने की बात करती है। सुशीलाजी साझे चूल्हे का मूंलमंत्र देती है, जिससे सफलता एक दिन अवश्य मिलेगी, तभी जाकर सभी को सम्मान और अधिकार मिल सकेंगे।

**निष्कर्ष**

निष्कर्षरूप में कहा जा सकता है कि वर्तमान में महिमाओं व दलित महिमाओं में शिक्षा एंव दलित साहित्य के अध्ययन एवं समाज के द्वारा महिमाओं में चेतना आई है। आज महिमायें उच्च शिक्षा प्राप्त करके समाज में सम्मान प्राप्त कर रही है। फिर भी समाज पूर्ण रूप से समानता नहीं आई है। सुशीला जी ने अपने इस उपन्यास के माध्यम से दलित महिमाओं व गैर दलित महिमाओं को पुरूषों के बराबर के अधिकार दिलाने का प्रयास किया है

एवं अपने साथ होने वाले अपमान एवं भेदभाव का पूरजोर विरोध करने का आह्वान किया है सुशीला जी इस उपन्यास के माध्यम से कहती है कि जब तक जातिवाद की धारणा समाप्त नहीं होगी तब तक सभी लोग एक नहीं हो सकते है। इसके लिये सर्वप्रथम जातिवाद प्रथा को समाप्त करना होगा। कह सकते है कि जब तक सवर्ण एवं दलित दोनों की सोच में परिवर्तन नहीं आयेगा तब तक समाज में चेतना व जागृती नहीं आयेगी। इस उपन्यास में अर्न्तजातीय विवाह के माध्यम से महिमाओं में चेतना लाने का प्रयास किया गया है। पश्चिमी संस्कृति के खुलेपन एवं आधुनिक शिक्षा के प्रचार प्रसार द्वारा ही समाज में चेतना आयेगी इसी कारण से 'तुम्हें बदलना ही होगा' उपन्यास महिमाओं में चेतना का मूल दस्तावेज सिद्ध होगा।

**अंत टिप्पणी**

1. *हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास – सरस्वती पाण्डेय, गोविन्द पाण्डे, पृ.स. 307.*
2. *वही, पृ.स. 307.*
3. *शिवरानी पुहाल – दलित लेखक में स्त्री चेतना की दस्तक, पृ.स. 139.*
4. *तुम्हे बदलना ही होगा, पृ.स. 28.*
5. *तुम्हे बदलना ही होगा, पृ.स. 37.*
6. *तुम्हे बदलना ही होगा, पृ.स. 55.*
7. *तुम्हे बदलना ही होगा, पृ.स. 58.*
8. *दलित लेखक में स्त्री चेतना शिवरानी प्रभात पुहाल, पृ.स. 141.*
9. *तुम्हे बदलना ही होगा, पृ.स. 78.*
10. *तुम्हे बदलना ही होगा, पृ.स. 81.*
11. *तुम्हे बदलना ही होगा, पृ.स. 11.*
12. *तुम्हे बदलना ही होगा, पृ.स. 104.*
13. *तुम्हे बदलना ही होगा, पृ.स. 108.*
14. *दलित लेखक में स्त्री चेतना, शिवरानी प्रभात पुहाल, पृ.स. 141*
15. *दलित लेखक में स्त्री चेतना, वही, पृ.स. 141*